Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 3039–3044

WORSHIP AND WORSHIP OF SHAKTI-DEVI IN THE FOLK CULTURE OF MITHILA

मिथिला की लोक संस्कृति में शक्ति-देवी की पूजा एवं उपासना

Neetu Kumari [1], Dr. Ajay Kumar Jha [2]

[1] Research Scholar, Department of History, Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga, India
[2] Supervisor, Department of History, Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga, India

ABSTRACT

English: The view of the subject of deities is an indicator of an important change in the field of religion, which can be called a devotional viewpoint. Its result has been widespread on society and individuals. Bhakti Bhaav has existed from the Vedic era till today. There is a concept that the fruits of devotion and faith can be achieved through worship and adoration. As a result of this concept, hundreds of types of folk deities were created in folk religion. As a result, among the goddesses, Parvati, Durga, Kali, Bhairavi, Chinmastika, Tara, which we call Shastra Devi, i.e., whose origin, worship, prayer, rituals, fasts, festivals etc. are described in Vedic texts, Sanskrit, Puranas, Dharmashastras etc. On the other hand, when folk culture developed in Mithila, many forms of goddesses in the form of gods and goddesses were created, which we today call folk goddesses, in which apart from Durga, Kali, Bhairavi, Chinmastika, Tara, Bishara, Kosi, Kamala, etc., nature-form Yaksha, snake, vampire, house, goddess-goddess, tree, river, mountain, Kinnar, etc. have developed as gods and goddesses. Vedic religion is the confluence of knowledge, devotion and karma. Mithila has been the center of folk culture, tantra-mantra etc. along with Vedic culture. My topic is based on the development of Shakti tradition in Mithila, which is also called the Goddess worship in Indian culture. My topic is mainly based on the heritage of Mithila's folk culture which has been influencing us from the Vedic period till today, which has preserved the folk culture in the minds of people even today. At present, there are Shakti (Goddess) worshippers in Mithila, who describe the Goddess described in the scriptures and the Goddess worship, temple, Gahvar etc. prevalent in the folk of Mithila. Which are still worshipped in the folk of Mithila.

Hindi: देवताओं के विषय का दृष्टिकोण धर्म के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन का सूचक है जिसे भक्तिप्रधान दृष्टिकोण कहा जा सकता है। इसका परिणाम समाज और व्यक्ति पर व्यापक हुआ है। वैदिक युग से आज तक भक्ति भाव विद्यमान है। भक्ति एवं विश्वास का फल पूजा और आराधना से प्राप्त किया जा सकता है ऐसी अवधारणा है। इस अवधाना के फलस्वरूप लोक धर्म में सैकड़ों प्रकार के लोक देवी-देवता का सृजन हुआ । फलतः देवियों में पार्वती,दुर्गा,काली,भैरवी,छिन्मस्तिका,तारा,जिसे हम शाश्त्रीय देवी अर्थात जिनकी उत्पति,पूजा,अर्चना,विधि,व्रत,उत्सव आदि का वैदिक ग्रन्थ, संस्कृत,पुराण,धर्मशास्त्र आदि में वर्णन है दूसरी ओर मिथिला में जब लोक संस्कृति का विकास हुआ इसके साथ देवी - देवता स्वरुप देवी के अनेक रूपों का सृजन हुआ जिसे आज हम लोक देवी कहते हैं जिनमे दुर्गा ,काली,भैरवी, छिन्मस्तिका,तारा,विसहरा,कोसी,कमला, आदि के अतिरिक्त प्रकृति स्वरुप यक्ष ,नाग, -पिशाच ,गृह,देवी - देवता ,वृक्ष ,नदी,पहाड़ किन्नर,आदि का विकास देवी- देवता के रूप में हुआ है । वैदिक धर्म ज्ञान ,भक्ति और कर्म की त्रिवेणी है । मिथिला वैदिक संस्कृति के साथ-साथ लोक संस्कृति, तंत्र-मंत्र आदि का केंद्र रहा है। मेरा विषय भारतीय संस्कृति में देवी उपासना जिसे हम शक्ति परंपरा भी कहते हैं मिथिला में शक्ति परम्परा का विकास पर आधारित है । मेरा विषय मुख्य रूप मिथिला की लोक संस्कृति की विरासत वैदिक काल से आज तक प्रभावित करते आया है जो आज भी लोक संस्कृति को जनमानस में बचा कर रखा है। वर्तमान समय में मिथिला में शक्ति (देवी) उपासक है जो धर्मशास्त्र में वर्णित देवी और मिथिला के लोक में प्रचलित देवी उपासना ,मंदिर ,गहवर आदि का वर्णन करना है। जो आज भी मिथिला के लोक में पूजित हैं।

Keywords: Mithila, Folk Culture, Goddess Durga, Kali, Bhairavi, Vishar (Vishhari), Tara, Kamala, Kosi, मिथिला, लोक संस्कृति, देवी दुर्गा, काली, भैरवी, विषहर (विषहरी), तारा, कमला, कोसी

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.6101

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

1.1. विस्तृत व्याख्या

हमारी भारतीय संस्कृति का मुख्य लक्ष्य आत्मानन्द की प्राप्ति है जो कि कर्म दवारा संभव है । अ्रतः यहाँ कर्म की प्रधानता परम्परा से चली आा रही है । वेदों की विलक्षणता यह है कि उनमें प्रकृति के प्रत्येक तत्व का सजीव रूप में वर्णन किया गया है। संभवतः प्रकृति के प्रत्येक तत्व में एक देवता की कल्पना करते रहने से वैदिक आर्य विभिन्न देवी देवताओं की अर्चना भी करने लग गये थे, किन्तु वे मानते थे कि सब के मूल में एक ही ब्रह्म है और प्रकृति की प्रत्येक शक्ति उसी के अधीन में संचालित होती है। उसकी पूजा करने से भलाई होती है । इसी से वे स्वर्ग में भी पृथ्वी की भांति ही सुख चाहते थे ।

शाक्त धर्म हिन्दू धर्म का वह सम्प्रदाय है, जो देवी को अपना उपास्यदेव मानता है। भारतीय हिन्दू-धर्म में देवी की पूजा और प्राचीनकाल से प्रचलित है। ऋग्वेद में उषा, अदिति तथा वाग्देवी की स्तुतियाँ हैं। इस स्तुति से वाग्देवी ओजस्विता प्रकट होती है। परवर्ती हिन्दू-धर्म में शक्ति या देवी की जिस रूप में उपासना प्रचलित हुई, स्पष्ट रूप ब्राह्मण-ग्रन्थों, आरण्यकों, उपनिशदों एवं पुराणों में दृष्टिगत होता है। पुराणों में देवी की उत्पत्ति तथा उसके विभिन्न स्परूपों के सम्बन्ध में अनेक कथाए प्राप्त होती है। 'हरिवंश पुराण' और विष्णुपुराण' में वर्णित हैं कि विष्णु ने पाताल लोक में जाकर कालरूपिणी योगनिद्रा से यशोदा के गर्भ में जन्म लेने की अर्चना की। 'मार्कण्डेय पुराण' में देवी को समस्त प्राणियों में शक्ति, शान्ति, क्षान्ति, त्वा, तुष्टि, बुद्धि और माता के रूप में अवस्थित बतलाया गया है। इस पुराण की एक कथा के अनुसार महिषासुर का वध करने के लिए ब्रह्मा, शिव, विष्णु, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य आदि अनेक देवताओं के तेज से एक देवी प्रादुर्भूत हुई, जिन्हें 'महिषासुरमर्दिनी' के नाम से जाना गया। 'मार्कण्डेय' पुराण का 'दुर्गासप्तशती' अंश विशेष सिद्ध हुआ है, जिसमें शक्ति के तीन रूपों-महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती की महत्ता का वर्णन है। पार्वती के शरीर के कोश के निकलने के कारण वे 'कौशिकी कहलायी। शिव के निकल जाने से पार्वती के शरीर का रंग काला पड़ गया, अतः उन्हें 'कालिका' कहा गया। युद्ध क्षेत्र में शुम्भ और निशुम्भ के आक्रमण करने से क्रुद्ध देवी के कृष्णवर्णी ललाट में करालमुखी 'काली' निकलीं, जिनके गले में नरमुण्डमाल, हाथ में खड्ग तथा शरीर पर व्याघ्र चर्म था। उन्होंने चण्ड-मुण्ड दैत्यों का संहार किया, अतः 'चामुण्डा कहलायी। इसके साथ ही कौशिका से व्युत्पन्न सात शक्तियों-ब्राह्मी, कौमारी, माहेश्वरी, वैष्णवी, वाराही, बारहसिंही और ऐन्द्री का भी वर्णन हैं। पुराण में देवी के नन्दसुता, शाकम्भरी, भ्रामरी आदि रूपों का उल्लेख है। देवी ही ब्रह्मरूपिणी, परमात्मा और शक्ति-सम्पन्न मानी गई। पूर्वमध्ययुगीन साक्ष्यों से भी शक्ति-पूजा का पता चलता है। शैलपुत्री, ब्रह्माचारिणी, चन्द्रघण्टा, कृष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धमाता च नव दुर्गा प्रकीर्तिताः। वायुपुराण में उल्लिखित के कार्य सम्पन्न करने के निमित्त उमा के शरीर से देवी की उत्पत्ति हुई थी। 'सप्तमातृका' के रूप में शक्ति का विकास हुआ जिनमें ब्राहमणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी और यमी या चामुण्डा, उनके सात स्वरूप माने गए।

शक्ति पूजा भारत में प्राचीन काल से चली आ रही है किन्तु पूर्व मध्यकाल में यह ज्यादा व्यापक हो गई। शक्ति पूजा के मूल में यह दार्शनिक विचार है कि ईश्वर अपनी शक्ति की सहायता से ही सृष्टि धरण एवं संहार करती है। छठी शताब्दी में धार्मिक भावना सपत्निक अुनग्रहशील देवताओं की ओर प्रवृत्त हुई। जिसमें पुरुष देवता के साथ सृजन शक्ति के रूप में नारी शक्ति देवी को एकात्मक किया गया। छठी शताब्दी से शक्ति उपासना स्पष्ट एवं निश्चित रूप में दिखाई देती है और नवीं शताब्दी से तो इस मत का प्रबल प्रभाव दिखाई देता है। मिथिला में भी इसका प्रभाव पड़ा। फलतः पंचदेवोपासना में शक्ति का उच्च स्थान है। इसी समय तंत्र-मंत्र का विकास हुआ। जिसके कारण लोगों के मन में यह विचार आया कि देवी -शक्ति मंत्र की जननी एवं शब्द ज्ञान की भंडार हैं। यह ज्ञान से आगे चेतना और शून्य में भी शून्य की साक्षी है। पूर्व मध्यकाल में जब तांत्रिक शक्ति का विकास हुआ तो माना गया कि सृष्टि संदर्भ में काम करने वाला धर्म शक्ति एक तांत्रिक शक्ति है जो गुह्य होते हुए भी लोक जीवन के आचार, विचार, उपचार, में प्रत्यक्ष है तथा ये अर्थ और काम भोग से सम्बद्ध या असम्बद्ध होकर लोक को मुक्ति की ओर प्रेरित कराती है।

मध्यकाल में शक्ति के दो रूपों का विकास हुआ - सौम्य और उग्र। सौम्य रूप में शिव के शक्ति का रूप में उमा गौरी, पार्वती, अर्द्धनारिश्वर, है तथा उग्र रूप में काली, भैरवी, रक्तदंतिका, चंडिका, तारा, छिन्नमस्तिका आदि है। देश काल एवं परम्परा से शक्ति के विभिन्न रूप हैं। मिथिला में शक्ति रूप के रूप में पूजित देवीयों की दो धाराएँ हैं एक आदिशक्ति ब्रह्मस्वरूपणी -सनातन धर्म से सम्बन्धित। दूसरा मिथिलांचल की लोक परम्परा अनुसार। इनमें सात माताओं ,सप्तमातृका, सात बहने, सप्त भगिनी, अष्टमातृका एवं दसमहाविद्या, षोडस मातृका, चौबीस मातृका, इक्यावन शक्तिपीठ, चौंसठ योगिनी आदि रूपों में विस्तारित किया गया। जबकि सभी का मूल किसी न किसी रूप में आदि शक्ति में ही निहित है।

2. आदिशक्ति ब्रह्मस्वरूपणी -सनातन धर्म से सम्बन्धित

2.1. दुर्गा

नारी-देवताओं में दुर्गा का स्थान सर्वोपरि है। शाक्तमत की तो यह आधार-शिला हैं। भारत के विभिन्न अंचलों में दुर्गा के विभिन्न रूपों की मूर्तियाँ मिलती हैं। दुर्गोपासना का सर्वप्रधान गं्रथ दुर्गा-सप्तशती है। यह मार्कण्डेय-पुराण के 81 से 83 अध्याय तक है। इसमें 567 श्लोकों को 700 मंत्रों में विभक्त किया गया है, इसलिए इसे दुर्गा-सप्तशती कहते है। दुर्गा-सप्तशती में दुर्गोपासना का जिस प्रकार विधान किया गया है, उसमें मानव-बुद्धि और

आध्यात्मिक और लौकिक शक्ति के उद्भव और विकास के-स्थूल, सूक्ष्म और परे-जितने रूप हो सकते है, दुर्गा की प्रतिमा समस्त शक्ति अर्थात् राष्ट्र-शक्ति का प्रतिरूप है। दुर्गा के रूप में यह भारत-शक्ति की उपासना है। दुर्गा-सप्तशती में बारंबार यही दिखाने की चेष्टा की गई है कि देवी विश्वव्यापिनी और एक हैं और उनकी इच्छा से उनके असंख्य रूप हो जाते हैं। महादुर्गा के विभिन्न रूपों में पूजा प्रचलित है। कहा गया है कि जिसे महालक्ष्मी के नाम से संबोधित करते हैं, वह सर्वांग्रसुन्दरी त्रिपुरसुन्दरी, 'षोडशी' हैं। इनके और भी अगणित नाम हैः जैसे-महाश्री, चंड, चंडी, चंडिका, चामुण्डी, भद्रकाली, नाना प्रकार की काली, दुर्गा, महेश्वरी, त्रिगुणा, भगवान की पत्नी, भगवती, परा आदि। समग्र रूप में दश महाविद्या के बारे में कहा जाता है कि ये स र्वसिद्धिदायिनी हैं यथा -

एता दश महाविद्या सिद्धिविद्याः प्रकीर्तिताः।

धमार्थकामदा नित्यं चतुर्वर्गफलप्रदा।

महाभारत में विविध कथाओं के माध्यम से लोकधर्म की अभिव्यक्ति की गई है, जिसमें धार्मिक विधानों के माध्यम से सामाजिक अभ्युत्थान की बात भी सम्मिलित है। इसमें विविध पात्रों, चरित्रों और व्यक्तियों का विशद वर्णन है तथा उनके अनेकानेक पक्षों का बहुरूपता के साथ निरूपण भी। सभी धर्मों और सम्प्रदायों नियतिवाद, प्रज्ञावाद और आध्यात्मवाद का स्थान-स्थान पर उल्लेख मिलता है। सत्य को ही एक माना गया है जो पाप से मुक्ति प्रदान करता था। संसार में रहकर मनुष्य वृत्ति के वशीभूत हो जाता है और वह अपने प्रारम्भिक जीवन से लेकर अन्तिम समय तक सुख-प्राप्ति के लिए करता है जो लौकिक जीवन से सम्बद्ध रहता है। वह साधारण धर्म और स्वधर्म दोनों को करता है। साधारण धर्म सार्वभौम और सार्वजनिक है, जिसमें अहिंसा, क्षमा इन्द्रियनिग्रह, दान, दया, सत्य, शौच, तप, ज्ञान आदि शामिल है। इसलिए सदवृत्तियों और सदगुणों का पालन करने के लिए निदेश दिया गया जिससे लोक-कल्याण और लोकोत्थान संभव था। समाज के कल्याण के लिए धार्मिक वृत्तियांॅ अत्यन्त आवश्यक थीं तथा धर्म के पथ पर चलकर समाज का उत्थान किया जा सकता था। लगभग पाँचवी सदी से छोटी-छोटी निजी गृहस्थियों की स्थापना, सुरक्षित पारिवारिक भूसंपत्ति के उदय तथा मुद्रा के प्रयोग के साथ घरेलू पूजा-अर्चना और महायज्ञों का जो चलन आरंभ हुआ था। पूजा के साथ भक्ति का सिद्धांत भी जुड़ा हुआ था। मध्यकालीन भक्ति का मतलब था अपने आराध्य के प्रति संपूर्ण समर्पण, जो मध्यकाल में धर्म की खास विशेषता बन गया। पूजा तथा भक्ति, दोनों तंत्र संप्रदाय के अभित्र अंग बन गए। पाँचवीं सदियों के दौरान नेपाल, असम, बंगाल, उड़ीसा, मध्य भारत तथा दकन में बहुत से ब्राह्मणों को भमिदान मिले, और लगभग इसी काल में इन क्षेत्रों में तांत्रिक ग्रंथों, मंदिरों तथा रीति-रिवाजों का भी उदय हुआ। तंत्र संप्रदाय के धार्मिक तत्वों का समावेष जैन तथा बौद्ध धमों और शैव एवं वैष्णव संप्रदायों में हुआ, तथा सातवीं सदी से लेकर मध्यकाल के पूरे दौर में इसका बोलबाला रहा जो आज भी है।

भक्ति के तीन प्रकार प्रदर्शित होते हैं मानसिक वाचिक और कायिक। मन मे बुद्धि के आधार पर ध्यान करना मानसिक भक्ति थी। जप, मंत्र-पाठ आदि वाचिक भक्ति कहा गया था। शरीर मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण लगाने वाले उपवास व्रत नियम आदि कायिक भक्ति के अन्तर्गत गृहीत किये गये थे। यही नही, पुराणों में तीन और रूप भी चर्चित किए गए है सात्विकी, राजसी और तामसी। पौराणिक धर्म में व्रतों का प्रमुख स्थान था। उपवास, दान, ब्राह्मण-भोजन, पूजन आदि विभिन्न प्रकार के विधान प्रत के अन्तर्गत किये गये जाते थे। ऐसा विश्वास था कि व्रतों के अनुपालन से शरीर और आत्मा शुद्ध होती है और ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। किन्तु व्रत करने वाला व्यक्ति सत्य, अहिंसा, सदाचार, दान, दया, अनुग्रह आदि मार्गों का अनुपालन करता ही था।

भारतीय सनातन धर्म परम्परा में प्रचलित व्रत-त्योहारों में चैती नौरात्र का एक विशिष्ट स्थान है। यह पर्व सभी जाति-धर्म के लोगों में समान रूप से प्रचलित है। भारतीय पंचांग के अनुसार वर्ष में तीन सौ पैंसठ दिन होते हैं। इनमें चालीस नवरात्र होते हैं, जिसमें दो नवरात्रों को सबसे अधिक प्रमुखता दी जाती है। इन में वासन्तिक नवरात्र चैत्र में तथा शारदीय नवरात्र आश्विन में ये दोनों का भारतीय संस्कृति में बहुत महत्व है। नवरात्र पूजन प्रतिपदा से दशमी पर्यन्त किया जाता है। नवरात्र में दो वर्ष की उम्र से लेकर दस वर्ष तक की कन्याओं का पूजन करने का विधान है। उन कन्याओं का नाम इस प्रकार है- कुमारी, त्रिमूर्तिनी, कल्याणी, रोहिणी, काली, चाण्डिका, शाम्भवी, दुर्गा तथा सुभद्रा। नवरात्र के नौ दिनों में जिन नव दुर्गा का पूजा-अर्चना किया जाता है। उनके नाम इस प्रकार हैं- (1) शैलपुत्री (2) ब्रह्मचारिणी (3) चन्द्रघंटा (4) कूष्माण्डा (5) स्कन्दमाता (6) कात्यायनी (7) कालरात्रि (8) महागौरी (9) सिद्धिदात्री। प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त प्रत्येक तिथि को क्रमशः उपर्युक्त नामों से कुमारी पूजा का और दुर्गा के नव नामों से दुर्गा के विग्रहों के पूजन का विधान है। विजया दशमी हमारा राष्ट्रीय पर्व है।

2.2. काली- तारा

दश महाविद्या में काली का स्थान प्रथम है। काली का दूसरा पर्यायवाची - श्यामा कहा जाता है। श्याम तारा से सम्बन्धि साधनमाला में वर्णित है - *''तारां श्यामां द्विभुजां, दक्षिणे वरदां, वाये सनालेन्दी - वरधरां, सर्वाभरणभूषितां, पद्म चन्द्रासनेपर्यघङ्घनिषणां चिन्तयेत्।''*

इसे उग्र तारा भी कहा जाता है और ब्राह्मण धर्म में पूजित दश महाविद्या में तारा का यही रूप अपनाया गया है। जो ब्राह्मण धर्म शक्ति उपासना के दश महाविद्या में द्वितीय स्थान पर है। इसके एक मुख, चार हाथें, तीन आँखे हैं और हाथ में कृपाण, कमल, कर्तशी, कपाल हैं शरीर नाग आभूषणों से सुशोभित हैं। देवी शव पर प्रत्यालीड़ आसन में खड़ी युवती रुप में हैं तथा गले में नरमुण्डों की माला है। मिथिला में इस प्रकार की तारा की पूजा दरभंगा राज, 'श्यामा माई' में स्थित राजनगर किला मधुवनी मे 'नौलाखा मंदीर' में की जाती है। इस तरह तारा के अन्य मुद्रा और नाम हैं - एकजाता तारा, धनद्तारा, वज्रतारा, कुरूकुल्ला, श्वेततारा, अष्टमहाभयतारा, मृत्युवंचनतारा, महामयूरी तारा आदि। मिथिला में तारा की पूजा और मूर्ति बहुत संख्या में

हैं जिन्हें तारा के विभिन्न नामों से पूजा जाता है। यह नाम विशेष रूप से 'मूर्ति प्रतिष्ठान जगह' के नाम पर भी है। जैसे दरभंगा के मलेच्छमर्दिनी तारा माधवेश्वर स्थान, नाहर भगवतीपुर तथा मंगरौनी - मधुवनी में हैं। मिथिला में इस प्रकार की मूर्ति वारी गांव – समस्तीपुर में देखा जा सकता है। तारा अपने भक्त को दुख से त्राण निवारण करती है। इन्हें नील सरस्वती भी कहा जाता है। नीलतंत्र में तारा का आठ नाम दिया गया है - तारा, उग्रतारा, महोग्रा तारा, वज्रतारा, नील तारा, सरस्वती, कामेश्वरी, भद्रकाली। तारा देवी की मूर्तियाँ विभिन्न प्रकार की मिली है - जैसे - बज्रतारा, मणितारा, अष्टतारा, महोग्रा, नीलसुन्दरी, हंसतारा। शक्तिसंगम तंत्र के अनुसार काली, तारा, त्रिपुरसुन्दरी एवं छिन्नमस्ता एक ही भगवती की विभिन्न रूप है। तारा की पूजा बौद्ध और बा्रह्मण दोनों धर्मों में होती है। ब्राह्मण धर्म में शिव को 'अक्षोम्य' कहा जाता है और 'तारा' इनकी पत्नि रूप में है। मिथिला में इस प्रकार की देवी की पूजा कौमारी और वैष्णवी देवी के रूप में होती है। इस प्रकार की मूर्ति मिथिला के मीठभागवानपुर में देखा जा सकता है। नीलतंत्र के अनुसार तारा बुद्धि देने वाली वाक् देवी, रक्षा करने वाली हैं, संसार के इस अथाह भवसागर से नैयारूपी बनकर पार लगाती है, दूख दूर करनेवाली है, शांति प्रदान करती है। नीलतंत्र के अनुसार यह हाथ में तलवार, छुरा, कमल, और नरमुण्ड रखती हैं। इन्हें ब्राह्मण धर्म में उग्र तारा, नीलतारा, एकजटा नील सरस्वती आदि कहा जाता है। तारा या उग्र तारा मिथिला की प्रसिद्ध भगवती देवी हैं। मिथिला का राजा नरसिंह ठाकुर तारा का सिद्ध उपासक था जिसने 'ताराभक्ति सुधर्णव' ग्रन्थ लिखा। इस प्रकार अन्य जगहों पर भी तारा उपासना होती थी जिसमें बनगांव मेंहसी सहरसा में उग्रतारा स्थान विशेष महत्वपूर्ण है। इसी अंचल में तारा की पूजा पूर्णियाँ जिले के सोनमा प्राणपुर गांव में भी होता है इसके अतिरिक्त वारीगांव -सिंधिया समस्तीपुर नवादा गांव वेनीपुर अनुमंडल दरभंगा, भगवतीपुर -मधुवनी- मंगरौनी -मधुवनी आदि जगहों पर देखा जा सकता है। वारीगांव -सिंधिया तारा की मूर्तियों पांच ध्यानी बुद्ध एवं आठ शक्ति देवी की मूर्तियों एक काला पत्थर बनी हुई हैं। दूसरी अन्य मूर्ति चन्द्रधरी संग्रहालय दरभंगा में देखी जा सकती है।

2.3. भैरवी

यह देवी काली का एक रूप है, जो रौद्र (भयंकर) और शक्तिशाली मानी जाती हैं। पशुपति (शिव) की प्रिय पत्नी, माया (लीला) स्वरूप।यह भजन देवी काली के भयंकर रूप का वर्णन करता है, जो असुरों को भयभीत करती हैं, लेकिन साथ ही शिव की पत्नी और प्रेम का भी प्रतीक हैं।

जय-जय भैरवि असुर भयाउनि,पशुपति भामिनी माया,सहज सुमति वर दियउ गोसाउनि,अनुगति गति तुअ पाया,

वासर रैनि सबासन शोभित,चरण चन्द्रमणि चूड़ा,कतओक दैत्य मारि मुख मेलल,कतओ उगिलि कएल कूड़ा

सामर बरन नयन अनुरंजित,जलद जोग फुलकोका,कट-कट विकट ओठ पुट पांडरि

लिधुर फेन उठ फोंका,घन-घन-घनय घुंघरू कत बाजय,हन-हन कर तुअ काता

विद्यापति कवि तुअ पद सेवक,पुत्र बिसरू जनि माता ।

यह भजन देवी काली की स्तुति है, जो असुरों को भयभीत करने वाली और शिव की प्रिय होने के साथ-साथ माया (लीला) स्वरूप भी हैं। जहाँ आपका एक पैर दिन-रात शवों के ऊपर रहता है, वहीं दूसरी तरफ आपके माथे पर चंदन का मंगल टीका भी सुशोभित है, जो मंगल का प्रतीक है।हे माँ भगवती! जहाँ आपका एक रूप सौम्य है, तो दूसरा रूप विकराल। आपके कमर पर घुंधरू की घन-घन प्रतिध्वनि बज रही है, तो हाथ में खड़ग है। इस तरह आप के अनेक रूप हैं। आप वीरता और शौर्य का प्रतीक है, तो प्रेम और दया की साक्षात मूर्ति का भी प्रतीक हैं। हे देवी, मुझे सहज बुद्धि प्रदान करो, ताकि मैं तुम्हारी गति को प्राप्त कर सकूं।श्याम तारा मुख्यरूप से कमल आसन पर विरजमान हैं तथा इनका दाहिना पैर नीचे कमलपर है। इनके सिर के उपर अमोघसिद्धि हैं।

3. मिथिलांचल की लोक परम्परा के अनुसार –शक्ति- देवी

लोक शब्द अति प्राचीनतम है । ऋग्वेद के पुरुष शूक्त में श्लोक का अर्थ जीव तथा स्थान के रूप में किया गया हैं---पद्ष्यां भूमिहिश श्रोत्रात्तथा लोका अकल्पयन । पर उसमें कहीं-कहीं इसके लिए जन का भी प्रयोग किया गया है । जिसका अर्थ साधारण जनता के रूप में होता है---बिश्वामित्रस्थ रक्षति ब्रह्म दं भारत जनं ॥ इस प्रकार लोक शब्द का अ्रर्थ है--देखनेवाला अर्थात् समस्तजन-समुदाय को जो इस कार्य को करता है लोक कहा जा सकता है। लोक विश्वास और परम्परा में पृथ्वी तथा आकाश, वनस्पति जगत, मानव और उसकी निर्मित वस्तु आत्मा तथा परलोक व्यक्ति, शकुन, अपशकुन,, भविष्यवाणी, आकाशवाणी, जादू, टोना आदि से सकते हैं । रीति-रिवाज तथा प्रथा में सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाएं व्यक्तिगत जीवन के आधार, व्यवसाय, उद्योग-धंधे, व्रत, त्योहार आदि के सम्बन्ध में प्रचलित रीति-रिवाजों को लिया जा सकता है।

मिथिलांचल की लोक परम्परा के अनुसार शक्ति के रूप में काली सात बहनों के रूप में प्रतिष्ठित हैं - काली बन्नी -वाक्देवी, काली, लोक -लुकेस्सरी -लोकेश्वरी, बधेस्सरी -वागेश्वरी, नदी मातृकाएं- जलेश्वरी, तथा धन से -धनेस्सरी -धनेश्वरी, लक्ष्मी। देश, काल एवं परम्परा से इन्हें सात माताओं ,सप्तमातृका, सात बहनें ,सप्त भगिनी, अष्टमातृका एवं दसमहाविद्या, षोडश मातृका, चौबीस मातृका, इक्यावन शक्तिपीठ, चौसठ योगिनी आदि रूपों में विस्तारित किया गया है, जबकि सभी का मूल किसी न किसी रूप में आद्याशक्ति में ही निहित हैं ।

वास्तव में राजसत्ता जनशक्ति से प्रभावित होने के कारण लोकपोषित हो गई थी, लोकपीड़क नहीं और लोकमत इससे प्रोत्साहन पाकर धर्मसाधना और धार्मिक साहित्य पर गहरा प्रभाव डाल रहा था। समाजिक पद्धति और उसके नियम की ओर भी वे जागरूक थी। इन निम्न वर्गों की जातियों में जो

लोकगाथाएं और किम्बदन्तियां प्रचलित थी वे प्रायः प्रवृत्तिमूलक थी इन सब प्रवृत्तियों से लोकाश्रित धर्म में समावेश हो गया। इससे परे जातियों में खान-पान, रीति-रिवाज, स्थानीय देवी देवता, पुरानी गाथाएं जो पहले से प्रचलित थी जब उनमें किसी विशेष धर्म साधना का प्रवेश हुआ तो उन्होंने अपनी सुविधनुसार उस धर्म साधना का रूप वैसे ही बदल लिया। मिथिला के तांत्रिक साधना में आत्मजयी को वीर की संज्ञा दी गई है। वीरत्व की साधना के लिए शक्ति की सानिध्य आवश्यक है । मिथिलाचंल की वीराचार क्रम में भैरव -कमला के साथ एवं गोरैया- बन्नी देवी के साथ तथा कोयला वीर- कोसी के साथ है। जैसे एक लोक में गायन है-'आगु-आगु कोयला वीर धंसना खसावत, पाछु-पाछु कोसिका उपमल जाय'। चण्डी के साथ जुड़े बावन वीरों में लाहुरा, बुल्ला, कर्मन, अगह्न, गॉवरिया, हंड़िया, कोयला, गोरैया आदि की पूजा मिथिलाचंल के राजपूत, निषाद मूलक जातियोंएउपजातियों, तथा निम्न जातियों में दुसाध, चमार, धानुक, केयोट आदि में पूजा जाता है। अतः सांस्कृतिक संदर्भ में जनपदीय अन्तःसम्बन्ध को भी रेखांकित किया जा सकता है।कमला-नदी लोक मातृका के रूप में पूजित है। जिसके मठ को 'मेंनीमठ' के नाम से जाना जाता है। वाक् देवी बन्नी कुल देवी रूप में पूजित है। नाग देवी में विषहारा, मनसा, सती विहुला है। जिसकी पूजा की जाती है। इसे मिट्टी का पिण्ड बनाकर पूजा जाता है। जैसा कि इनके गीत से हमें पता चलता है-

नामी नामी केसिया विषहरि अँगना लोटाय , हे !अँह बिनु विषहरि कियो ने सहाय !
विषहरि नाग मैया करू ने कल्याण हे ! अहीँ केर हाथ में अम्बे ,जीव केर प्राण !
विषहरि मैया हे करै छी पुकार हे ! विषहरि काया माया नेह अपार
भूल चुक छमियोउ मैया रहियोऊ उदार , हे ! मैया क्रोधे होएत दुनियाँ उजार हे
अहाँ जगदम्बा राखू ह्रदय विशाल हे !

विषहरि- विष हारिणी सर्प भय बिनाशिनी तथा अभय दायिनी देवी है। विषहरी माता की पूजा मिथिला में किया जाता है । मिथिला की लोक परंपरा में पुरुष और महिला दोनों भजन करते हैं ।

4. मूल्याङ्कन

सारांश रूप में मेरा कहने का भाव है की मिथिला में शास्त्रीय देवि उदाहरनार्थ पारवती,दुर्गा,काली,भैरबी,तारा आदि देवी जिसका वर्णन धर्म शास्त्र में भी है और मिथिलावासी द्वारा जनमानस में भी पूजी जाती है । जिसका कि मंदिर है । इसके अतिरिक्त हर मिथिलावासी के घर में मिट्ठी पिंड स्वरुप देवी का रूप बना कर पूजा जाता है जिसे हम लोक देवी- देवता कहते है । प्रायः इन देविओं को लोक विशेष स्थान में स्थापित करते है इनमे एक विशेष खास बात है की इन लोक देवी-देवता का मंदिर नहीं कहा जाता -इसे गहबर,स्थान- आदि कहा जाता है। इन देवियों में काली,बनी,गोरैया, दुर्गा,बिसहरी,भैरबी,कमला,कोसी,गंगो,कुसमा मालिन,नयना-जोगिन आदि है । मानव जीवन में अपनी चेतना को ईश्वर से एकाकार करने के लिय जो समझ लेते हैं या अपना लेते हैं, उनका जीवन धन्य हो जाता है। इसी सौभाग्य की प्राप्ति के लिय, अनेक साधक विविध प्रकार के यत्न करते हैं। इस सौभाग्य की प्राप्ति के लि, कर्मकांड, पूजा-पाठ, व्रत-उपवास आदि कि, जाते हैं, ताकि की इस पुण्यवेला से लाभान्वित हो सकें। परमात्मा को पुकारते तो अनेक व्यक्ति हैं, किंतु उनका अनुग्रह उन्हीं को प्राप्त हो पाता है, जो साधना का समुचित समन्वय अपनी अंतरात्मा से कर पाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ 37
मोन,प्रफुल्ल कुमार सिंह हमारे लोक देवी-देवता, समीक्षा प्रकाशन-मुजफ्रपफरपुर, 1999, पृ. 4
झा डी. एन., श्रीमाली,प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पुनः मुद्रण, 2003, पृ. 399.
मोन,प्रफुल्ल कुमार सिंह हमारे लोक देवी-देवता, समीक्षा प्रकाशन-मुजफ्रपफरपुर, 1999,पृ. 2.
वही,
झा डी. एन., श्रीमाली,प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पुनः मुद्रण, 2003 ,पृ. 295.
शर्मा रामशरण पूर्व-मध्यकालीन भारत का सामंती समाज और संस्कृति, राजकमल प्रकाषन,दिल्ली,1996,पृश्ठ. 34
वही, पृष्ठ 34
सत्यार्थी, सत्यनारायण झा ,दर्शनीय शहर दरभंगा, विस्मृत प्रकाशन, हाउसिंग कालोनी लहेरियासराय ;दरभंगाद्ध 2004, पृ.28.
वही, पृष्ठ सत्यार्थी, सत्यनारायण झा ,दर्शनीय शहर दरभंगा, विस्मृत प्रकाशन, हाउसिंग कालोनी लहेरियासराय ;दरभंगाद्ध 2004, पृ.28.
Mishra,Jayadeva,A History of Budhist Iconoraphy in Bihar, Prabhavati Prakashan Saidpur, Patna, 1992, p. 183.
Memoris of the Archeological Survey of India, No.20, The Origin and Cult of Tara - By Hirnand Shastri, Indological Book Corporation, Delhi 1997, p.26; सिन्हा,,विन्देश्वरी प्रसाद भारतीय कला को बिहार की देन,बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्,पटना,तृतीय संस्करण, 1999, पृ165.
वही, पृ. 260.
शाक्तदर्शन एवं दस महाविद्या, डॉ. उमारमण झा, भाषा भारती प्रकाशन सरस्वती भवन उजान, लोहनारोड, 1997, पृ. 260.

Shastri H.P, The Origin and cult of Tara, Indological Book Corporation, 1997, p. 12.
सत्यार्थी, सत्यनारायण झा ,दर्शनीय मिथिला, विस्मृतप्रकाशन, हाउसिंग कालोनी लहेरिया सराय, दरभंगा 2001, पृ. 187-188.
वही, पृ. 2.
वही, पृ. 20.
Shastri, H.P. The Origin and cult of Tara, Indological Book Corporation 1997, p. 22.
वही, पृ. 263.
रेणु,फनीश्वर नाथ, परती परिकथा, राजकमल प्रकाशन, पटना, तीसरा संस्करण 1990, सातवी आवृति 2003, पृ. 16, 22, 89.
सत्यार्थी, सत्यनारायण झा, मिथिला नगरी की खोज, विस्मृति मिथिला प्रकाशन, ई/44 हाउसिंग वोर्ड कालोनी, लहेयिासराय, दरभंगा, द्वितीय संस्करण, 2002, पृ. 26
विद्यापति पदावली
ऋगवेद , 10/60/14
ऋग्वेद रू 2।53।12